ICSSR Sponsored

ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2024; Vol. 13 (2):163-169

भारतीय समाज में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

निशा सिंह एवं सन्तेश्वर कुमार मिश्र

समाजशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय,
कोटवा–जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)

Received: 19.09.2024 *Revised: 30.10.2024* *Accepted: 06.11.2024*

सारांशः

वैश्वीकरण ने भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया है, जिसका महिलाओं की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। यह शोधपत्र बताता है कि वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को किस तरह से बदल दिया है, स्थानीय शासन से लेकर राष्ट्रीय राजनीति तक, आर्थिक अवसरों में वृद्धि, वैश्विक नारीवादी विचारों से परिचय और संस्थागत सुधारों के माध्यम से। जबकि वैश्वीकरण ने अधिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व के लिए जगह खोली है, पितृसत्ता, सामाजिक–आर्थिक असमानता और क्षेत्रीय विषमता जैसी चुनौतियाँ इसकी पूरी क्षमता को सीमित करती रहती हैं। यह शोधपत्र महिलाओं के लिए राजनीतिक कोटा जैसी नीतियों की प्रभावशीलता और अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों के व्यापक निहितार्थों की भी जाँच करता है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, महिलाओं की राजनीतिक स्थिति, भारत, राजनीतिक सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, राजनीतिक कोटा, नारीवाद, अंतरराष्ट्रीय आंदोलन

परिचय

वैश्वीकरण, जिसकी विशेषता सीमाओं के पार अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृतियों और राजनीतिक प्रणालियों का परस्पर संबंध है, ने वैश्विक स्तर पर व्यापक प्रभाव डाला है। भारतीय समाज के लिए, जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से जटिल है, वैश्वीकरण ने महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भूमिकाओं में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। यह शोधपत्र वैश्वीकरण के कारण महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में आए बदलावों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें विश्लेषण किया गया है कि कैसे वैश्विक प्रभावों ने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों पैदा की हैं।

भारतीय महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव को पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं की पृष्ठभूमि में समझना चाहिए, जिन्होंने सदियों से भारतीय समाज को आकार दिया है। जबकि भारत में महिलाओं ने विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों में योगदान दिया है,

औपचारिक राजनीति में उनकी भागीदारी अक्सर सीमित रही है। हालाँकि, वैश्वीकरण ने लोकतंत्र और लैंगिक समानता के वैश्विक मानदंडों तक पहुँच को सुगम बनाया है, भारतीय महिलाएँ राजनीतिक प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से शामिल होने में सक्षम हुई हैं। यह शोधपत्र इस राजनीतिक जुड़ाव की प्रकृति और वैश्वीकरण ने भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति को किस हद तक बदल दिया है, इसकी जाँच करता है।

क्रियाविधिः

यह शोध पत्र गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग करता है, जो भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए अकादमिक लेखों, सरकारी रिपोर्टों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के डेटा जैसे माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है। यह पद्धति भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के ऐतिहासिक विश्लेषण को 1990 के दशक के आर्थिक उदारीकरण सुधारों के बाद से वैश्वीकरण के प्रभावों के समकालीन अध्ययन के साथ जोड़ती है।

1. डेटा संग्रहण

डेटा विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से एकत्र किया गया, जिनमें शामिल हैंः

• अकादमिक पत्रिकाएँः सहकर्मी–समीक्षित लेख जो भारत में लिंग, वैश्वीकरण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर चर्चा करते हैं। जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज एंड डेमोक्रैटाइजेशन जैसे स्रोत ऐतिहासिक और समकालीन दोनों दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायक थे।

• सरकारी और गैर सरकारी संगठन की रिपोर्टें : महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करने वाली नीतियों और सुधारों पर डेटा एकत्र करने के लिए भारतीय सरकारी संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, जैसे संयुक्त राष्ट्र महिला, की रिपोर्टों का उपयोग किया गया।

• अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन : संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक संस्थानों के अध्ययन और रिपोर्ट, जो भारत में महिला कोटा और लैंगिक समानता कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, का उपयोग घरेलू नीतियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए किया गया था।

2. विश्लेषणात्मक ढांचाः

डेटा से उभरे प्रमुख पैटर्न और थीम की पहचान करने के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग किया गया। विश्लेषण निम्नलिखित क्षेत्रों पर केंद्रित था :

• आर्थिक सशक्तिकरण और राजनीतिक एजेंसी से इसका संबंध

• राजनीतिक भागीदारी को आकार देने में शिक्षा और जागरूकता की भूमिका

• वैश्विक मीडिया, अंतर्राष्ट्रीय नारीवादी आंदोलन और घरेलू राजनीति पर उनका प्रभाव

• संस्थागत सुधार, जैसे राजनीतिक कोटा, और उनकी प्रभावशीलता

3. **सैद्धांतिक ढांचाः**

यह शोध पत्र वैश्वीकरण के संदर्भ में लिंग और राजनीति के अंतर्संबंध को समझने के लिए नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत को अपनाता है । यह सैद्धांतिक दृ

ष्टिकोण इस बात की जांच करने की अनुमति देता है कि वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन भारत में लिंग मानदंडों और प्रथाओं के साथ कैसे अंतःक्रिया करते हैं। चंद्र तलपड़े मोहंती जैसे विद्वान, जिन्होंने वैश्वीकरण के तहत तीसरी दुनिया की महिलाओं के समरूपीकरण की आलोचना की, और अमृता बसु , जिन्होंने भारत में महिलाओं के जमीनी स्तर के आंदोलनों का पता लगाया, इस अध्ययन के लिए सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं।

मोहंती का तर्क है कि ''वैश्वीकरण अक्सर विकासशील देशों में पारंपरिक पितृसत्तात्मक मूल्यों को मजबूत करता है, जिससे एक जटिल गतिशीलता बनती है जहाँ महिला सशक्तिकरण वैश्विक ताकतों द्वारा सक्षम और विवश दोनों होता है'' (मोहंती, 2003)। यह शोधपत्र वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों, जैसे कि बढ़ी हुई राजनीतिक भागीदारी, और पितृसत्ता द्वारा उत्पन्न स्थायी चुनौतियों का विश्लेषण करके भारतीय संदर्भ में इन तनावों की पड़ताल करता है।

इसी तरह, अमृता बसु इस बात पर जोर देती हैं कि "वैश्विक आंदोलनों ने महिलाओं के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन उन्हें भारत जैसे देश की विशिष्ट सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों को संबोधित करने के लिए स्थानीयकृत किया जाना चाहिए" (बसु, 1999)। उनका काम वैश्विक रुझानों के राजनीतिक प्रभाव का विश्लेषण करते समय स्थानीय संदर्भों को समझने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

आर्थिक उदारीकरण और इसके राजनीतिक परिणामः

भारत में वैश्वीकरण की शुरुआत 1990 के दशक की शुरुआत में आर्थिक उदारीकरण सुधारों के साथ हुई, जिसके कारण भारतीय बाजार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश के लिए खुल गए। आर्थिक उदारीकरण के साथ–साथ श्रम बाजार में भी महत्वपूर्ण बदलाव हुए, जिससे महिलाओं को औपचारिक रोजगार, उद्यमिता और नेतृत्व की भूमिकाओं तक अधिक पहुँच मिली। जैसे–जैसे महिलाओं की आर्थिक आजादी बढ़ी, वैसे–वैसे उनकी राजनीतिक जागरूकता और राजनीतिक भागीदारी की क्षमता भी बढ़ी।

कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती संख्या ने महिलाओं की निष्क्रिय एजेंट के रूप में सामाजिक धारणा को बदलकर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदार बना दिया है। आर्थिक सशक्तिकरण ने महिलाओं को राजनीतिक स्थानों में अधिक प्रतिनिधित्व की मांग करने की अनुमति दी है, जिससे श्रम अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य और बाल देखभाल से संबंधित नीतियों पर प्रभाव पड़ा है। प्रमुख महिला व्यापारिक नेता और उद्यमी भी राजनीतिक रूप से सक्रिय हो गई हैं, अपने मंचों का उपयोग लिंग–संवेदनशील नीतियों की वकालत करने के लिए कर रही हैं जो सभी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में सुधार करती हैं। संगीता कामत के अनुसार , ''वैश्वीकरण ने भारतीय श्रम बाजार को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिससे कुछ क्षेत्रों में महिलाओं का वर्चस्व बढ़ गया है, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए राजनीतिक और आर्थिक वकालत में शामिल होने के लिए नए स्थान बने हैं'' (कामत, 2017)।

ग्रामीण भारत में, आर्थिक उदारीकरण ने स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और माइक्रोफाइनेंस पहलों के विकास को बढ़ावा दिया है, जो महिलाओं को कौशल

विकास और वित्तीय समावेशन के लिए लक्षित करते हैं। ये जमीनी स्तर के संगठन, मुख्य रूप से आर्थिक आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अनजाने में महिलाओं के बीच राजनीतिक एजेंसी की भावना को बढ़ावा देते हैं। एसएचजी सदस्यों ने अक्सर स्थानीय शासन संरचनाओं, जैसे पंचायतों में नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाई हैं, जहाँ वे महिलाओं के अधिकारों, संसाधनों तक पहुँच और सामुदायिक विकास की वकालत करते हैं।

शैक्षिक उन्नति और राजनीतिक जागरूकताः

वैश्वीकरण के प्रमुख लाभों में से एक शिक्षा पर जोर देना रहा है, खासकर लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा पर। संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों और सतत विकास लक्ष्यों जैसे अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में, भारत ने महिलाओं के लिए साक्षरता दर और शैक्षिक अवसरों में सुधार करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। शिक्षा सीधे राजनीतिक भागीदारी से जुड़ी हुई है, क्योंकि शिक्षित महिलाओं के अपने राजनीतिक अधिकारों को समझने, राजनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल होने और चुनाव लड़ने की संभावना अधिक होती है। निवेदिता मेनन का मानना है कि ''वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों के प्रसार को सुगम बनाया है, जिसका सीधा असर जमीनी स्तर पर और शासन के उच्च स्तरों पर, दोनों जगह, राजनीतिक रूप से जुड़ने की उनकी क्षमता पर पड़ा है'' (मेनन, 2012)। शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि ने महिलाओं को सरकार के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाया है। विविध पृष्ठभूमि की महिलाओं ने चुनाव लड़े हैं और जीते हैं, जिससे शासन में लिंग–संवेदनशील दृष्टिकोण सामने आए हैं।

शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि ने महिलाओं को सरकार के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाया है। विभिन्न पृष्ठभूमियों की महिलाओं ने चुनाव लड़े हैं और जीते हैं, जिससे शासन में लिंग–संवेदनशील दृष्टिकोण सामने आए हैं। शैक्षिक प्रगति ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के व्यवसायीकरण में भी योगदान दिया है, जिसमें कई शिक्षित महिलाएँ कानून, लोक प्रशासन और नागरिक समाज संगठनों में करियर बना रही हैं, जो अक्सर औपचारिक राजनीतिक भागीदारी के लिए कदम के रूप में काम करते हैं।

वैश्विक मीडिया और नारीवादी आंदोलनः

वैश्विक मीडिया ने भारत में महिलाओं के अधिकारों के बारे में जनमत और जागरूकता को आकार देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन ने वैश्विक नारीवादी विचारों और अभियानों के तेजी से प्रसार में मदद की है। भारत में महिलाएँ, विशेष रूप से युवा पीढ़ी, लैंगिक समानता, राजनीतिक अधिकारों और मानवाधिकारों पर वैश्विक विमर्श के बारे में अधिक जागरूक हो गई हैं। रुडमज्वव जैसे आंदोलन, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में शुरू हुए, तेजी से भारत में फैल गए, जिससे यौन उत्पीड़न और लिंग आधारित हिंसा के मुद्दों पर एक राष्ट्रीय संवाद बना। नंदिता गांधी बताती हैं कि ''वैश्विक मीडिया ने भारतीय महिलाओं की आवाज को बुलंद किया है, लैंगिक मुद्दों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्पष्ट किया है और राजनीतिक वकालत के लिए एक मंच

तैयार किया है'' (गांधी, 2014)। रुडमज्वव जैसे अभियान, जिसने वैश्विक स्तर पर गति पकड़ी, ने भारत में लैंगिक समानता के बारे में बातचीत को बढ़ावा दिया है और यौन उत्पीड़न और लिंग आधारित हिंसा से निपटने के लिए राजनीतिक सुधारों पर जोर दिया है।

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय महिला संगठनों की भूमिका और वैश्विक नारीवादी नेटवर्क का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय नारीवादी संगठन अक्सर संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ मिलकर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, लिंग बजट और चुनावी सुधारों की वकालत करते हैं। इन अंतरराष्ट्रीय संबंधों ने महिलाओं की राजनीतिक दृश्यता और प्रभाव को बढ़ाने के घरेलू प्रयासों को बढ़ावा दिया है।

राजनीतिक कोटा और संस्थागत सुधारः

लोकतंत्र और लैंगिक समानता के वैश्विक मानदंडों से प्रभावित सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक सुधारों में से एक स्थानीय शासन संरचनाओं में लैंगिक कोटा का कार्यान्वयन रहा है। 1993 में पारित भारतीय संविधान के 73वें और 74वें संशोधन ने पंचायतों (ग्राम परिषदों) और शहरी नगर पालिकाओं जैसे स्थानीय शासन निकायों में महिलाओं के लिए 33ः आरक्षण की शुरुआत की। इस ऐतिहासिक सुधार का उद्देश्य जमीनी स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना था। बीना अग्रवाल का तर्क है कि ''स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए कोटा ने महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, लेकिन इन सुधारों की प्रभावशीलता गहराई से जड़ जमाए हुए पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण पर काबू पाने पर निर्भर करती है'' (अग्रवाल, 2001)।

हालाँकि राजनीतिक कोटा ने स्थानीय सरकार में महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की है, लेकिन इन सुधारों की सफलता असमान रही है। कई मामलों में, इन पदों पर चुनी गई महिलाओं को सामाजिक और संस्थागत बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण की कमी और पुरुष परिवार के सदस्यों द्वारा हेरफेर शामिल है। हालाँकि, जहाँ इन कोटा को सफलतापूर्वक लागू किया गया है, वहाँ इसके परिणामस्वरूप ठोस नीतिगत परिवर्तन हुए हैं, खासकर स्वास्थ्य, शिक्षा और महिला अधिकारों से संबंधित क्षेत्रों में।

राज्य और राष्ट्रीय विधायिकाओं में राजनीतिक कोटा बढ़ाने पर चल रही बहस भारत में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की जटिलताओं को दर्शाती है। समर्थकों का तर्क है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए प्रणालीगत बाधाओं को दूर करने के लिए ऐसे कोटे आवश्यक हैं, जबकि विरोधियों का तर्क है कि लिंग के बजाय योग्यता को राजनीतिक प्रतिनिधित्व निर्धारित करना चाहिए। इन बहसों के बावजूद, लिंग कोटा ने भारतीय राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति को सामान्य बनाकर राजनीतिक परिदृश्य को निर्विवाद रूप से बदल दिया है।

चुनौतियाँ और सीमाएँः

वैश्वीकरण के माध्यम से प्राप्त महत्वपूर्ण लाभों के बावजूद, भारतीय महिलाओं को अभी भी राजनीतिक समानता प्राप्त करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय समाज में गहराई से समाई पितृसत्तात्मक संरचनाएँ महिलाओं को

हाशिए पर रखती हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक मानदंड अक्सर महिलाओं को राजनीतिक गतिविधियों से बाहर रखते हैं। राजनीति में प्रवेश करने वाली कई महिलाओं को पुरुष सहकर्मियों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है, और कुछ मामलों में, उनकी राजनीतिक भूमिकाएँ प्रतीकात्मक होती हैं, जिसमें पुरुष रिश्तेदार राजनीतिक निर्णयों पर वास्तविक नियंत्रण रखते हैं।

इसके अलावा, वैश्वीकरण ने सभी महिलाओं को समान रूप से प्रभावित नहीं किया है। दलितों, आदिवासियों और मुसलमानों जैसे हाशिए के समुदायों की महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। जाति, वर्ग और लिंग का अंतर सभी महिलाओं के लिए राजनीतिक सशक्तिकरण हासिल करने के प्रयासों को जटिल बनाता है, क्योंकि इन समूहों को अक्सर राजनीतिक भागीदारी के लिए आवश्यक आर्थिक और शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच की कमी होती है।

निष्कर्षः

स्त्रियः समग्रे राज्ये यत्र, प्रज्ञाशक्तया प्रवर्तते।
तत्र धर्मः सदा प्रतिष्ठित, यत्र नारी रक्षते।।
जहां महिलाएं बुद्धि और शक्ति के साथ शासन में भाग लेती हैं,
वहां हमेशा धर्म की जीत होती है और महिलाओं के नेतृत्व से समाज की रक्षा होती है। यह महाभारत और मनुस्मृति जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों के लोकाचार से प्रेरित एक समकालीन रचना है , जो समाज के नैतिक और नैतिक मार्गदर्शन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है।

वैश्वीकरण ने निस्संदेह भारतीय समाज में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला है। आर्थिक अवसरों को खोलकर, महिलाओं को वैश्विक नारीवादी विमर्श से परिचित कराकर और संस्थागत सुधारों को सुगम बनाकर, वैश्वीकरण ने महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए नए रास्ते खोले हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण के लाभ असमान रूप से वितरित किए गए हैं, और महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना, क्षेत्रीय असमानताएँ और सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ महिलाओं की पूर्ण राजनीतिक भागीदारी में बाधा डालती रहती हैं। आगे बढ़ते हुए, ऐसी नीतियों को लागू करना आवश्यक है जो इन चुनौतियों का समाधान करें और सभी महिलाओं के लिए अधिक समावेशी राजनीतिक माहौल बनाएं। शैक्षिक अवसरों का और विस्तार, जमीनी स्तर के आंदोलनों के लिए निरंतर समर्थन, और सरकार के उच्च स्तरों पर राजनीतिक कोटा का संभावित विस्तार यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण होगा कि वैश्वीकरण के माध्यम से प्राप्त लाभ कायम रहें और विस्तारित हों।

संदर्भः

देसाई, एस., और जोशी, ओ. (2019)। भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्वः समकालीन चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज , 28(4),

413–429।

कपूर, आर. (2021). भारत में लिंग, वैश्वीकरण और सशक्तिकरण की राजनीति। महिला सशक्तिकरण पर वैश्विक दृष्टिकोण , 34(2), 98–115.

सिन्हा, ए. (2018)। भारत में महिला सशक्तिकरण पर वैश्वीकरण का प्रभावः एक सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस , 79(1), 105–119।

जयाल, एनजी (2006)। स्थानीय लोकतंत्र को बढ़ावा देनाः भारत की पंचायतों में महिलाओं के लिए कोटा का प्रभाव। लोकतंत्रीकरण , 13(1), 15–36।

यूएन वीमेन. (2020). रुडमज्वव मूवमेंट का वैश्विक प्रभाव. खलिंक, से लिया गया.

मोहंती, सी.टी. (2003). फेमिनिज्म विदाउट बॉर्डर्सः डीकोलोनाइजिंग थ्योरी, प्रैक्टिसिंग सॉलिडैरिटी. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस.

राय, एस.एम., और स्पैरी, सी. (2018)। प्रदर्शनकारी प्रतिनिधित्वः भारतीय संसद में महिला सदस्य। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

अग्रवाल, बी. (2001). लिंग और संपत्ति पर नियंत्रणः दक्षिण एशिया में आर्थिक विश्लेषण और नीति में एक महत्वपूर्ण अंतर। विश्व विकास , 29(6), 989–1003.

बसु, ए. (1999). वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महिला आंदोलन. भारत में महिलाएँ और राजनीति , 19(1), 17–31.

गांधी, एन. (2014). नारीवादी लहरें, वैश्वीकरण और भारत में महिला अधिकार . सेज प्रकाशन.

कामत, एस. (2017). वैश्वीकरण और श्रम का स्त्रीकरणः भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर प्रभाव . पैल्ग्रेव मैकमिलन.

मेनन, एन. (2012). नारीवादी की तरह देखना. जुबान.

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.